आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक: -प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2458 • उदयपुर, गुरुवार 16 सितम्बर, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

दुःखी दवे परिवार तक पहुंची नारायण सेवा की मदद

संस्थान क्षतिग्रस्त कूल्हे के ऑपरेशन में करेगा मदद

इसी वर्ष जनवरी में मोड़ी ग्राम के एक वाहन चालक धनंजय जी के सड़क हादसे में क्षतिग्रस्त कूल्हे के ऑपरेशन का जिम्मा नारायण सेवा संस्थान उठायेगा। यह जानकारी संस्थान अध्यक्ष प्रशान्त जी अग्रवाल ने दी। इस सम्बंध में संस्थान के जनसम्पर्क विभाग की टीम मोड़ी ग्राम गई और हादसे की जानकारी ली। टीम ने परिवार को राशन व वस्त्र आदि की तात्कालिक सहायता भी प्रदान की। राहत दल में विष्णु जी शर्मा हितैषी, भगवान प्रसाद जी गौड़ व संस्थान के हॉस्पीटल अधीक्षक प्रवीण सिंह जी शामिल थे। धनंजय जी दवे की स्थिति और उपचार को लेकर उदयपुर में चिकित्सकों से लाइव सम्पर्क किया गया। जिन्होंने अहमदाबाद व उदयपुर के एक अस्पताल में चले इलाज व एक्सरे रिपोर्ट देखने के बाद बताया कि दवे के फेफड़े काफी कमजोर हैं और बलगम जमा हुआ हैं। जब तक बलगम नहीं निकल जाता और फेफड़े साफ नहीं हो जाते तब तक एनेस्थिसिया नही दिया जा सकता और ऑपरेशन के लिए एनेस्थिसिया देना आवश्यक हैं। उन्होंने जमा बलगम को निकालने के लिए परामर्श दिया ताकि जल्द से जल्द ऑपरेशन कर उन्हें फिर से पांवों पर खड़ा किया जा सके।

धनंजय जी अपने परिवार का इकलौता कमाने वाला व्यक्ति है। उनके पिछले 6 माह से बेड पर पड़ जाने से मां, पत्नी, दो बेटियों व एक बेटे वाले परिवार पर संकट का घना कोहरा छा गया। घर में जो भी पैसा था वह अस्पतालों में खर्च हो गया। बावजूद इसके ऑपरेशन होना अभी बाकी है। जबकि दो वक्त की रोटी का जुगाड़ भी मुश्किल हो गया है। नारायण सेवा संस्थान ने ऑपरेशन व बच्चों की शिक्षा में भी मदद का भरोसा दिया है।

गुड़गांव में दिव्यांग सहायता शिविर

नारायण सेवा संस्थान की गुड़गांव शाखा के तत्वावधान में मित्सुबिशी इलेक्ट्रिक ऑटोमेटिव इंडिया प्रा. लि. के सहयोग से दिव्यांग जांच, ऑपरेशन चयन, कृत्रिम अंग माप एवं सहायक उपकरण वितरण शिविर आयोजित हुआ।

उक्त शिविर में 20 दिव्यांगों को ट्राईसाइकिल, 10 को व्हीलचेयर, 10 जोड़ी वैशाखियां, 8 के कैलिपर्स का माप लिया गया, 2 के कृत्रिम अंगों का नाप लिया गया तथा 4 का ऑपरेशन के लिये चयन किया गया।

शिविर के मुख्य अतिथि श्री विशाल जी नागदा (प्रतिनिधि मित्सुबिशी इलेक्ट्रिक ऑटोमोटिव इंडिया प्रा. लिमिटेड), अध्यक्ष श्री रघुनाथ जी गोयल, (समाजसेवी) विशिष्ट अतिथि श्री रमेश जी सिंघला (कोषाध्यक्ष वैश्व समाज धर्मशाला) पधारें। डॉ. एस.एल. जी गुप्ता– (ऑर्थोपेडिक सर्जन) ने अपने साथी नाथूसिंह जी एवं किशन जी– टेक्नीशियन के साथ सेवाएं दी। शिविर टीम में आश्रम की ओर से अखिलेश जी (शिविर प्रभारी),श्री गणपत जी रावल (आश्रम प्रभारी), श्रीरमेश जी शर्मा एवं श्री मुकेश जी त्रिपाठी उपस्थित रहे ।

उमेश की दो साल से रुकी जिन्दगी शुरु

चोरी–चोरा, गोरखपुर (यू.पी.) निवासी 27 वर्षीय उमेश कुमार राजभर करीब 2 साल पहले एक रेल दुर्घटना के शिकार हो गए। दुर्घटना का जिक्र करते हुए वे रूंधे गले से बताते हैं कि मां–पिता की मौत तो मेरे लड़कपन में ही हो गई थी। खैर, ईश्वर की मर्जी के आगे किसी की नहीं चलती। भाभी और भाई ने मुझे बड़ा कर किया। परिवार की मदद के लिए लोहे के कारखाने में मजदूरी करने लगा। घरवालों से मिलने के लिए गांव जा रहा था कि चलती ट्रेन में चढ़ते वक्त गिर पड़ा। मुझे तो कुछ सुध नहीं रही बांया पांव पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया था। किसी ने मुझे हॉस्पीटल पहुंचाया। वहां करीब 1 माह तक इलाज चला जिसके दौरान घुटने के नीचे से पांव काटना पड़ा। कल तक दौड़ रही जिन्दगी एकाएक थम गई। बेड पर बैठे रहने के सिवा कुछ भी नहीं कर सकता। कुछ दिन पहले किसी परिचित ने नारायण सेवा संस्थान की जानकारी दी तो मैं उदयपुर पहुंचा। संस्थान की प्रोस्थेटिक टीम ने कटे पांव का मेजरमेंट लिया और कृत्रिम पांव लगा दिया। अब मैं अपने पांवों पर चलने लगा हूं। मैं इतना खुश हूं कि कह नहीं पा रहा .... बस इतना ही कहूंगा कि मेरी जिन्दगी रूक गई थी जिसे फिर से शुरू करने वाली नारायण सेवा संस्थान और इनके डॉक्टर्स व टीम को बहुत धन्यवाद... आपने कृत्रिम अंग का मुझे उपहार दिया है ... मैं इसके लिए बहुत आभारी रहूंगा....

खुर्जा (उत्तरप्रदेश) में कृत्रिम अंग वितरण शिविर

नारायण सेवा संस्थान आप सभी की शुभकामनाओं व सहयोग से विश्वभर में दिव्यांग सहायता व सेवा में लिये जानी जा रही है।

देश–विदेश में समय–समय पर शिविर लगाकर कृत्रिम अंगों का वितरण, दिव्यांग सहायक उपकरण एवं दिव्यांग ऑपरेशन जारी है।

ऐसा ही कृत्रिम अंग वितरण शिविर 12 अगस्त 2021 को नारायण सेवा संस्थान के खुर्जा, जिला– बुलंदशहर, उत्तरप्रदेश आश्रम में संपन्न हुआ।

इस शिविर में 19 दिव्यांगों के लिये कृत्रिम अंग तथा 07 के लिये कैलिपर्स की सेवा सराहनीय हुई। उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्री हरपाल सिंह जी (पूर्व विधायक खुर्जा), अध्यक्षता श्री सत्यवीर शास्त्री जी (पूर्व प्रधान महोदय, खुर्जा), विशिष्ट अतिथि श्रीमान जयप्रकाश जी चौहान, श्रीमान राजप्रताप सिंह जी (समाज सेवी), श्रीमान योगेन्द्र प्रताप जी राघव (सेवा प्रेरक एवं संयोजक) कृपा करके पधारे और संस्थान की सेवा प्रकल्पों की सराहना की।

टेक्नीशयन टीम में श्री नाथूसिंह जी, शिविर टीम में श्री हरिप्रसाद जी (शिविर प्रभारी), श्री भरत जी भट्ट का पूर्ण योगदान रहा।

कैथल (हरियाणा) में राशन वितरण

नारायण सेवा संस्थान ने कोरोना से प्रभावित परिवारों तथा जरूरतमंदों को लॉकडाउन व अनलॉक काल में राशन वितरण की सेवा प्रारंभ की है। देशभर के 50000 परिवारों को इसका लाभ दिया जा रहा है।

इस शृंखला में संस्थान की कैथल शाखा द्वारा 26 जुलाई को राशन वितरण शिविर लगाकर 38 परिवारों को राशन किट प्रदान किये। प्रत्येक किट में आटा, दाल, चावल, घी, तेल नमक लाल मिर्चि पाउडर, धनिया, शक्कर आदि सामग्री समाहित है।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान विकास जी शर्मा, अध्यक्ष श्रीमान सतपाल जी गुप्ता, विशिष्ट अतिथि श्री रामकरण जी, श्री मदनलाल जी मित्तल, श्री सतपाल जी मंगला शाखा संयोजक, श्री दुर्गाप्रसाद जी, श्री सोनू जी बंसल, श्री जितेन्द्र जी बंसल।

शिविर टीम लालसिंह जी भाटी (शिविर प्रभारी), रामसिंह जी सहायक।

पोपलटी उदयपुर में पोषाहार शिविर सम्पन्न

नारायण सेवा संस्थान ने 'नारायण गरीब परिवार राशन वितरण योजना' के अन्तर्गत गुरुवार को ग्राम पंचायत पोपलटी में शिविर आयोजित किया। संस्थापक चेयरमैन कैलाश 'मानव' ने संस्थान की जुलाई माह में हुई सेवाओं पर प्रकाश डालते हुए कहा कि उदयपुर जिले में 1850 किट बांटे गए तथा 5000 से ज्यादा जरूरतमंदों को मदद पहुंचाई गई।

संस्थान अध्यक्ष प्रशान्त जी अग्रवाल ने बताया कि शिविर में संस्थान निदेशक वंदना जी अग्रवाल और पलक जी अग्रवाल की 10 सदस्यीय टीम ने पोपलटी और आसपास के बेरोजगार आदिवासियों को 100 मासिक राशन किट, 150 साड़ियां और 200 बच्चों को बिस्किट के पैकेट वितरित किए।

प्रसन्नता प्रेम का झरना : कैलाश मानव

अपने मन के अन्दर झांकना पड़ेगा और उसके लिये समय निकालना पड़ेगा। समय दिया है किसने ?परमात्मा ने दिया, ब्रह्माण्ड ने दिया। जब हम ब्रह्माण्ड के लिये समय देंगे, ब्रह्माण्ड आपको उपहार देगा। सुख का उपहार, शांति का उपहार। ये दिव्यांग जब चलने लगते हैं। जब दिव्यांग बोलता है– पापा–पापा मेरे पैर आ गये। बाबूजी–बाबूजी मैं चलने लग गया। बाबूजी मेरी अंगुली पहले हिलती नहीं थी अब हिलने लग गई। बाबूजी मेरा पंजा पहले मुड़ता नहीं था अब मुड़ने लग गया। कितनी खुशी होती है, मुझे तो बहुत होती है आपको भी बहुत होती है। और चैनराज जी लोढ़ा साहब जिन्होंने पूरा हॉस्पीटल बना दिया।

खुद कोट पहनते थे पुराना। कमला जी ने एक बार कहा था– बाबूजी आपका कोट फट गया, मैं नया कोट ले आती हूँ। नहीं, नहीं, कमला जी नहीं, अभी तीन महिने और चलेगा। इसके आप टांका लगा दो। उस तीन महिने में कोट का लाने का इतना खर्च करूंगा, उतना तो मैं किसी विधवा को भोजन प्राप्त करा लूंगा, उसके घर का चूल्हा जल जाऐगा। कैसे होते हैं लोग ? इसी जमाने के लोग हैं।

दया करो जो सब जीवो पर,
ईश्वर को वो भाए
दान वहीं करता जग में,
जो परहित को अपनाए।
बेबस, पीड़ित, वंचितजन के,
आँसू आज मिटाएं।
हारे हुए दिव्यांगों को,
मिलकर आज चलायें।।

सम्पादकीय

मान–अपमान दोनों यों तो विपरीत ध्रुवों वाले अर्थसूचक शब्द हैं, पर ये दोनों मानव जीवन में पल–पल संचरित होने वाले भाव हैं। मान मिलने पर व्यक्ति की प्रसन्नता का पारावार नहीं रहता है तो अपमान होने पर उसकी तिलमिलाहट भी छिपी नहीं रहती है। मान को हमने गर्व का तथा अपमान को शर्म का विषय मान लिया है। मान होने पर व्यक्ति को लगता है कि वह अन्य लोगों की तुलना में श्रेष्ठ है। वह स्वयं को कुछ विशिष्ट मानने लगता है। ऐसे ही अपमान हो तो व्यक्ति बदले की भावना से आवेशित हो उठता है। उसका अहंकार फुफकारने लगता है। मानव मानस के अध्येता एवं प्रभु प्रेमी कहते हैं कि न मान उचित व अच्छा है और न अपमान। मान और अपमान दोनों ही घातक हैं। इन दोनों में भी मान को ज्यादा खतरनाक माना गया है क्योंकि यह सुखद अभिमान का जनक होता है। मान मिलते ही व्यक्ति में गिरावट का अंदेशा ज्यादा बढ़ जाता है। अपमान एक ओर व्यक्ति को झिंझोड़कर जागृत करने का एक उपक्रम है ठीक वैसे ही मान व्यक्ति को गफलत में ले जाने वाला गुणधर्म है। इसलिये अच्छा यही है कि हम मान और अपमान, दोनों से बचें।

कुछ काव्यमय

समता के सागर में
गोते लगाने वाला ही
समझ के मोती चुन पाता है।
जिसने लोगों की बातों को
अपनी बातें मान ली वो
मन की नहीं सुन पाता है।
जिसने अपने ताने बाने से
अपने ही करघे को चलाया,
वो ही विचारों की चादर बुन पाता है।
- वरदीचन्द राव

अपनों से अपनी बात

गुणों का संवर्धन

धनवान है इतना,
कभी इंसान निर्धन है।
कभी सुख है, कभी दुख,
इसी का नाम जीवन है।
जो मुश्किल में ना घबराये,
उसे इंसान कहते है,
पराया दर्द अपनाये,
उसे इंसान कहते है।।

कोई पीड़ा ऐसी नहीं जो लम्बे समय तक चलती है। सुख भी ऐसा नहीं जो लम्बे समय तक चलता हो। ये तो धूप–छांव के उलट फेर में हम सबका शक्ति परीक्षण है। एक परिवार के मुखियां तीर्थ यात्रा पर साल–दो साल के लिए जा रहे थे। अपने तीनों पुत्रों को चावल की दो– दो मुट्ठी दी, कि इसका संर्वधन करना।

मैं वापस आऊंगा तो बढ़ा हुआ प्राप्त करना चाहता हूँ। एक ने कहा दो मुट्ठी दो मुट्ठी चावल का क्या संर्वधन करें। पिताजी साल– दो साल बाद आयेंगे बाजार से लाकर के आधा –किलो– एक किलो– दो किलो दे देंगे। पाँच किलो दे देंगे। दूसरे ने कहा पिताजी ने दिया है इनको तिजोरी में रख दो। इनकी आरती करो, इनको अगरबत्ती करो, इनको धूप–दीप करो। तो वैसा रख दिया। तीसरा बेटा जो बहुत अधिक बुद्धिमान था। उसने उन चावलों को बो दिया।

अच्छा खाद दिया, अच्छा पानी दिया और 2 साल में पचास गुना चावल

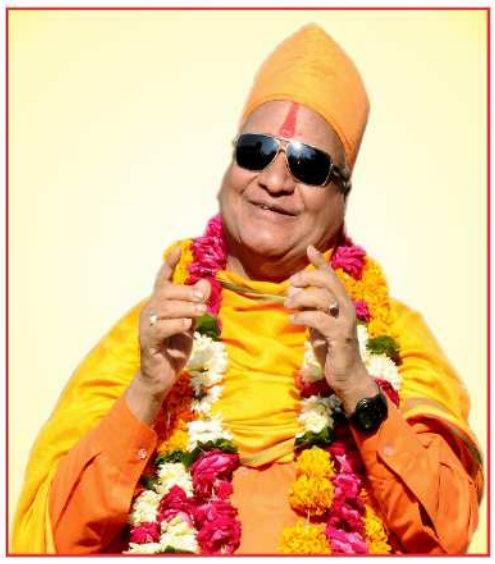

हो गये। पिताजी को कहा आप बोरा भरलो। आपने दो मुट्ठी चावल दिया। अब बोरा भरकर के चावल उग गये। अपने गुणों का अपने को संर्वधन करना चाहिए। कैकेयी ने ये नहीं किया, मंथरा ने नहीं किया, लक्ष्मण ने मन में सोचा और ऊपर से बोले इनका कोई दोष नहीं है। समझ गयी, मैं समझ गयी। अब कौशल्या जी–

समझ गयी मैं समझ गयी,
कैकयी नीति नहीं
मुझे राज्य का खेद नहीं,
राम–भरत में भेद नहीं।

कितनी महान् बातें कही। सीखने लायक बातें। कैकयी का पुत्र वो भी मेरा पुत्र जैसा है। मेरे लिए राम –भरत में कोई भेद नहीं है। एक तरफ कैकयी देखो, और एक तरफ अन्धेरा, एक तरफ उजाला। कौशल्या जाने उजाला और कैकयी जाने अन्धेरा वो कहती है कि राम –भरत में भेद नहीं। पर मैं क्या चाहता हूँ?

मेरा राम न वन जावे,
यहीं कहीं पर रहं पावे।
उनके पैर पड़ूंगी मैं,
कहकर यही अड़ूंगी मैं।।
भरत राज्य की जड़ ना हिले।
मुझे राम की भीख मिले।

रो पड़ी कौशल्या, सीता, लक्ष्मण जी की आँखों में आंसू आ गये। मैं राम की भीख मांग लूंगी। हे! मेरी मंजली बहना, छोटी बहना, तुम्हारा पुत्र इतना राज्य करे कि राज्य की जड़ें कोई हिला नहीं पावे, पर मुझे राम की भीख मिले। मेरा राम यहीं कहीं पर रह पावे। कर्त्तव्य की कथा, परिवार की एकता, तोड़ने का प्रयत्न किया कैकयी ने, चाहती तो कौशल्या विद्रोह कर सकती थी। चाहती तो लक्ष्मण को राम भी आदेश दे सकते थे। ये अन्याय नहीं होना चाहिए। लेकिन राम भगवान के चेहरे पर पूर्ण गम्भीरता थी। जिन्होंने कह दिया स्वार्थ स्वयं परमार्थ हुआ। जिन्होंने जंगल को पावन कारक माना। उन राम भगवान के चेहरे पर कोई तनाव नहीं। उसी समय वहाँ उर्मिला जी जिन उर्मिला का महत्व बार –बार बखाना जाता है। फिर 14 साल लक्ष्मण जी के बिना रही थी। कौशल्या माताजी की सेवा, सुमित्रा माताजी की सेवा की उन्होंने।

कैकयी की भी सेवा की। कैकयी माता ने जिन्होंने उनके पतिदेव लक्ष्मण जी को भी राम भगवान के साथ वन में भेजा। राम भगवान ने बड़ी मुश्किल से आज्ञा दी थी। आगे प्रसंग आयेगा। भगवान तो हमेंशा साथ में वो कहीं गये नहीं है।

–कैलाश 'मानव'

केवल अच्छाई अपनाएं

एक बार एक बहुत ही सज्जन और सुशील व्यक्ति था। एक दिन एक आदमी उसके सामने आकर उसे अपमानित करने लगा, अपशब्द कहने लगा। लेकिन उस सज्जन व्यक्ति ने कोई जवाब नहीं दिया, और मुस्करा कर आगे बढ़ने लगा।

इस पर भी उस दुर्जन व्यक्ति का क्रोध शांत नहीं हुआ, और वह निरन्तर अपशब्दों की बौछार करता रहा, किंतु तब भी उस सज्जन व्यक्ति की मुस्कुराहट कम नहीं हुई तो उस दुर्जन आदमी को और अधिक गुस्सा आ गया। उसने उस सद्गुणी पुरूष को और भी अधिक कटुवचन कहे, यहाँ तक कि उसके माता–पिता तक के विषय में भी अपशब्द कहे। लेकिन इतने पर भी उस संभ्रांत व्यक्ति को ज़रा–सा भी क्रोध नहीं आया, और केवल मुस्कुराता रहा।

आखिरकार वह असभ्य आदमीझल्लाता हुआ वहाँ से चला जाता है। उस सज्जन व्यक्ति के साथ उसका मित्र भी था। इस पूरी घटना को देखकर उससे रहा नहीं गया, और बोला कि ये तुमने क्या किया ? उस आदमी ने तुम्हें इतना अपमानित किया, फिर भी तुम मुस्कुराते रहे, तुमने उसे कुछ कहा क्यों नहीं ?

सज्जन व्यक्ति ने मित्र से कहा– तुम मेरे साथ, मेरे घर चलो। घर जाने के बाद वह मित्र को आदर से बिठा कर एक कमरे के अंदर चला जाता है। थोड़ी देर वह अपने हाथ में कुछ मैले–कुचैले वस्त्र लिए कमरे से बाहर आता है, और अपने मित्र से कहता है कि लो इनको पहन लो। मित्र ने हैरान होते हुए कहा – इन मैले वस्त्रों को मैं कैसे पहन सकता हूँ ? इनमें से तो बदबू आ रही है।

वह सज्जन व्यक्ति उन्हें फेंक देता है, और कहता है कि तुम जिस तरह अपने स्वच्छ वस्त्रों को छोड़ कर मैले–कुचैले, गंदे वस्त्र नहीं पहन सकते, वैसे ही मैं भी किसी अनजान और असभ्य व्यक्ति के मैले–कुचेले अपशब्दों और अपमान को अपने जीवन में स्थान नहीं दे सकता। मैं अपने जीवन में अच्छे वस्त्र त्यागकर मैले–कुचैले वस्त्र कैसे पहन सकता हूँ ? मैं ऐसे अच्छे विचारों को त्यागकर गंदी बातों को अपने जीवन में कैसे अपना सकता हूँ ?

इसलिए हमें भी जीवन में कभी अपनी अच्छाइयों को छोड़कर, दूसरों की बुराई को नहीं अपनाना चाहिए। यदि कोई हमें आहत या अपमानित करने का प्रयास करे तो अपने आप को चंदन के उस वृक्ष की तरह बना लो, जो जहरीले साँपों से घिरा रहकर भी उनके ज़हर को धारण नहीं करता।

जो रहीम उत्तम प्रकति,
का करि सकत कुसंग,
चंदन विष व्यापत नहीं,
लिपटे रहत भुजंग।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

सेठ को जो बात मान–मनुहार से समझ नहीं आ रही थी वही बात राजमल की दो टूक झिड़की से एक पल में समझ में आ गई। सेठ ने अपनी गलती स्वीकारी तथा सभी शिविरार्थियों को एक ही पंगत में बिठा कर भोजन कराया।

इस तरह के अनुभव कैलाश के लिये नई बात नहीं थी। आये दिन कोई न कोई प्रसंग उपस्थित होता था जिससे जीवन को समझने की एक नई दृष्टि उत्पन्न होती थी। एक बार वह उदयपुर के बड़े अस्पताल के आर्थोपेडिक वार्ड में रोगियों से मिल रहा था तब उसकी भेंट एक विचित्र व्यक्ति से हुई। जीवन जीने का अन्दाज ऐसा भी हो सकता है यह सोच सोच कर वह मुदित हो गया। इस रोगी के हाथ में प्लास्टर बंधा था, हर कोई इसके शीघ्र स्वास्थ्य लाभ और पट्टा खुलने की कामना करता।

कैलाश ने भी ऐसा ही कहा तो वह बोल उठा – मुझे पट्टा कटवाने की जल्दी नहीं है, मैं तो तारीख से 15 दिन बाद पट्टा खुलवाना चाहता हूं, मैं तो ज्यादा से ज्यादा दिन अस्पताल में रहना चाहता हूं। कैलाश अचरज में पड़ गया, हर कोई जल्द से जल्द अस्पताल से छुट्टी करवा कर घर जाना चाहता है मगर यह है कि ज्यादा से ज्यादा दिन अस्पताल में रहना चाहता है। कैलाश को यह रोगी दिलचस्प लगा। वह पूछ बैठा–ऐसा क्यूं? रोगी ने बताया कि उसकी दुकान है जिस पर ग्राहकों की भारी भीड़ उमड़ती है, लोगों को लाइन बनाकर खड़े रहना पड़ता है। एक पल की फरसत नहीं मिलती, दिन कैसे गुजर जाता है पता ही नहीं चलता। हर दिन यही बात। यहां भर्ती हुआ हूं तो लोगों से मिलना–जुलना तो हो रहा है, आप जैसे लोगों से बातचीत तो हो रही है, कुछ अच्छा सोचने का समय तो मिल रहा है। उसकी बातें सुन कैलाश के चेहरे पर एक मुसकान खिल गई।

अंश - 112

जरुरी है स्वच्छता की आदत अपनाना

अशुद्ध पानी पीने, स्वच्छता का ध्यान न रखने एवं गंदे शौचालय के उपयोग से डायरिया का खतरा बढ़ सकता है। कुपोषित व्यक्ति डायरिया के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं। डायरिया कुपोषण के स्थिति को और बिगाड़ देता है। पांच साल से छोटे बच्चे में कुपोषण का प्रमुख कारण डायरिया है। डब्ल्यूएचओ के अनुसार, स्वच्छता का ध्यान रखकर हर साल दुनियाभर में पांच साल से छोटे करीब तीन लाख बच्चों की मृत्यु को कम किया जा सकता है। इसलिए स्वच्छता का ध्यान रखना बहुत जरूरी है।

स्वच्छता से कम होंगे बीमार

स्वच्छता का ध्यान रखने से डायरिया के जोखिम को कम करने के अलावा अन्य स्वास्थ्य लाभ भी मिलेंगे।

- आंतों के कीड़ों के प्रसार को कम किया जा सकता है।
- कुपोषण की गंभीरता और प्रभाव को कम किया जा सकता है।
- स्कूल में बच्चों को अलग–अलग सुविधाएं प्रदान की जा सकती है।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

श्रमिकों व कामकाजी महिलाओं को छाते भेंट

वर्षा का दौर पुनः प्रारंभ होने के साथ ही नारायण सेवा संस्थान ने दिव्यांगों, कामकाजी महिलाओं और श्रमिकों को छाता वितरण कार्यक्रम भी गत बुधवार से पुनः प्रारम्भ किया। संस्थान अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल ने बताया कि निदेशक वन्दना जी अग्रवाल के निर्देशन में संस्थान के मानव मंदिर परिसर और हिरण मगरी सेक्टर–4 में छातों का वितरण हुआ।

छाता वितरण का यह क्रम शहर व उसके आसपास के इलाकों में जून के अन्तिम सप्ताह में आरम्भ किया गया था।

अनुभव अमृतम्

हम सेवा कर सकें, पवित्र सेवा, निष्काम सेवा। मणीप्रभाजी महाराज ने कहा– कैलाशजी सेवा का आशीर्वाद खूब है लेकिन सेवा में साधनों की जरूरत भी पड़ती है। बिना साधनों से फ्री सेवा नहीं होती। हमने सुना है आप आदिवासी क्षेत्रों में बहुत जाते है, ये हमारे हिरण साहब भी जाते हैं। आर. सी. मेहता साहब महाराणा प्रताप एग्रीकल्चर युनीवर्सीटी के आर.सी. मेहता साहब उस समय जोबनेर में थे, वो भी पास में खड़े। उन्होंने कहा–ये मेहता साहब भी जाते हैं। इनके प्रति हमारी बड़ी श्रद्धा–भावना है। ऐसे मैं तो जैन संत हूँ, हम जेब भी नहीं रखते, पैसा भी नहीं रखते। पण बोलो मैं आपकी किस तरह मदद कर सकती हूँ? मैंने कहा– महाराजश्री किसी दिन प्रवचन में आपके श्रीमुख से निकल जाये, सौ बोरी गेहूं आपकी ओर से हो जाये तो इन आदिवासी क्षेत्रों में रहने वालों के बड़ा काम आएगा। महाराजजी ने कहा– जरूर मैं बोलूंगी और तीन दिन बाद प्रवचन में उन्होंने बोला– ये कैलाशजी बैठे हैं, हिरण साहब बैठे हैं, इनके पुत्र डॉक्टर शैलेन्द्र जी हिरण एक्स– रे क्लीनिक वाले बैठे हैं। मैं तो जेब रखती नहीं भाइयों– बहनों, मेरे मन में ऐसा आया है, सौ बोरी गेंहू आपकी ओर से हो जावे तो देख लीजिए। हमारे जैन संतों ने केवल संकेत करना होता है। हमारे कोई बैंक एकाउन्ट नहीं है, हमारे पास पैसा नहीं है। प्रवचन जैसे समाप्त हुआ। लोगों ने कहा– तीन बोरियाँ हमारी ओर से लिख लो, फिलहाल। अच्छा देवीलाल जी तीन बोरी लिखो भाई साहब, एक– दो कार्यकर्त्ता थे जो समाज के दो– तीन व्यक्ति, महानुभाव खड़े हुए।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 239 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

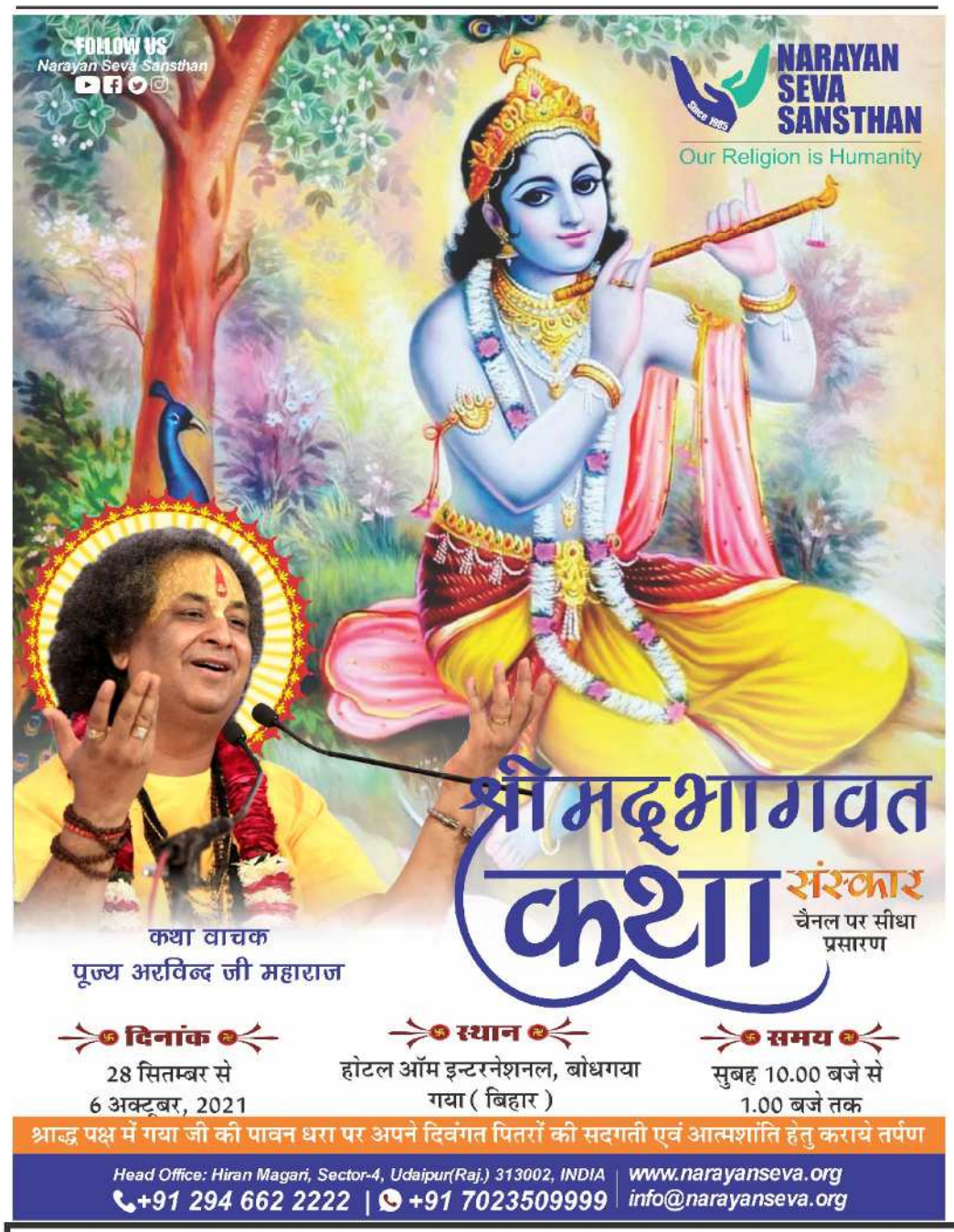

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूटेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023